e publication

मासिक पशुपालन निर्देशिका

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
हिसार (हरियाणा)

मई, 2023 क्रमांक 05

डेयरी पशुओं की महामारी: गलघोटू एवं मुँह एवं खुर रोग

पशुओं में मुँह एवं खुर रोग अत्याधिक संक्रामक विषाणु/ वायरस जनित रोग है। गलघोटू रोग संक्रामक जीवाणु जनित रोग है।

मुंह खुर रोग के लक्षण :

- तेज बुखार,दूध उत्पादन में गिरावट
- मुँह से अत्याधिक लार टपकती है और झाग बनती है।
- जीभ, होंठ व मसूड़ों पर छाले बन जाते हैं जो बाद में फट कर घाव में बदल जाते हैं।
- मुँह खोलते और बंद करते समय एक विशेष प्रकार की चप-चप की आवाज आती है।
- खुरों के बीच घाव होने पर पशु लंगड़ा कर चलता है।
- मुँह में घाव होने की वजह से पशु चारा लेना और जुगाली करना बंद कर देता है।

गलघोटू रोग के लक्षण :

- प्रारंभिक चरण में पशु को अचानक अत्यंत तेज बुखार हो जाता है।
- पशु को साँस लेने में परेशानी एवं सांस के साथ आवाज आना, मुँह से लार गिरना, नाक से बलगम आना और आंखों से पानी आना भी इस रोग के मुख्य लक्षण हैं।
- इसके साथ-साथ इस रोग से गले, गर्दन, डयूलेप (हीक) और जीभ में भी सूजन आ जाती है।
- पशु खाना-पीना बंद कर देता है।
- गलघोटू रोग में पशु की मृत्यु भी संभव हैं ।

अगले ब्यांत में पूरा दूध उत्पादन हेतु गर्भावस्था में दें इन बातों पर ध्यान

- गर्भावस्था की अंतिम तिमाही में पशुओं को दौड़ाएं, भगाएं नही, आराम से चलाएं जिससे नियमित व्यायाम हो सकें ।
- पशु को गर्भधारण के 7वें महीने के बाद 15 दिनों की अवधि के भीतर सुखाया जाना चाहिए।
- 6-7 महीने के गर्भ के बाद एक बछिया को दुधारू पशुओं के साथ बांधना चाहिए; और उसके शरीर, पीठ और थन की मालिश करनी चाहिए।
- सटीक प्रजनन रिकॉर्ड (गर्मी में आने व सीमेन की, ब्याने की अपेक्षित तिथि) ध्यान रखें । पशु को एक या 2 सप्ताह पहले अलग करे । और अलग-अलग प्रसव पेन में स्थानांतरित कर दें। धान के पुआल जैसे बिस्तर सामग्री को जमीन पर फैला देना चाहिए
- ब्याने के लगभग एक सप्ताह की अवधि में विटामिन डी अधिक खुराक या इंजेक्शन चिकित्सीय परामर्श के बाद दें।
- गर्भवती पशुओं के लिए 1.25 से 1.75 किलोग्राम का अतिरिक्त सांद्र मिश्रण प्रदान किया जाना चाहिए और अच्छी गुणवत्ता वाले फलीदार चारे को भी खिलाना चाहिए।
- फिसलन वाली फर्श की स्थिति से बचें, जिससे गर्भवती पशु गिर सकता हैं।
- ब्याने के लगभग 3-5 दिन पहले और बाद में आसानी से पचने योग्य आहार खिलाएं (गेहूं का चोकर 3 किलो + 0.5 ग्राम मूंगफली केक + 100 ग्राम नमक का खनिज मिश्रण)।

डॉ देवेन्द्र सिंह, डॉ सुजोय खन्ना, डॉ ज्योति शुन्ठवाल